विदेशी विवरण (Foreign accounts)

प्राचीन भारतीय साहित्य सांस्कृतिक जीवन पर विदेशियों के वृत्तांत, राजनीतिक और सामाजिक दशा पर अधिक प्रकाश डालते हैं। प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में विदेशियों का वर्णन भारतीय लेखकों के वर्णनों से अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है जिनका वर्णन निम्न है।

यूनानी और रोमन लेखकों का विवरण → सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व ईरान के शासक डेरियस ने स्काईलैक्स नामक सैनिक को सिन्धु प्रदेश की जानकारी लेने के लिए भेजा था। उसने सिन्धु नदी से ईरान तक के जल मार्ग का पता लगाया। डेरियस के परसेपोलिस और नक्शेरुस्तम लेखों में भारत का उल्लेख सिद्ध करता है कि उस समय भारत और ईरान के बीच राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित हो चुके थे।

~~इस युग के यूनानी यात्री हेकेटियस मिलेटस था।~~

सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व हेरोडोटस तथा टेशियस ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने फारसी ज्ञान के आधार पर भारत का वर्णन किया है।

सिकन्दर के साथ अनेक यूनानी इतिहासकार ने भारत में प्रवेश किया और भारत का वर्णन अपनी पुस्तक में किया है। इस समय के समकालीन लेखकों में अरिस्टोबुलस, निआर्कस, चारस और युमेनीस हैं। इन्होंने भारतीय घटनाओं और परिस्थितियों का वर्णन अपेक्षाकृत सही रूपों में किया है।

सिकन्दर के परवर्ती लेखकों में मेगास्थनीज, प्लिनी, टालेमी, डायोडोरस, एरियन, प्लूटार्क, कर्टियस, जस्टिन, स्ट्रैबो आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यूनानी लोग इतिहास जानने और लिखने में बहुत रुचि रखते थे और इसी कारण भारत से लौटने के उपरान्त अपनी यात्रा के अनुभवों को पुस्तकबद्ध कर दिया।

सिकन्दर आक्रमण

(ii) भारत पर सिकन्दर के आक्रमण की तिथि भी यूनानी लेखकों के द्वारा ही ज्ञात की जाती है। टालेमी ने भारत के भूगोल के विषय में और प्लिनी ने पशुओं तथा वनस्पति के विषय में वर्णन किया है।

मेगास्थनीज जो सेल्यूकस का राजदूत था तथा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भारत आया था। भारत के विषय में इसकी सर्वप्रसिद्ध पुस्तक "इण्डिका" है। इससे चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यकाल एवं शासन-व्यवस्था का वर्णन प्राप्त होता है।

डायमेकस भी राजदूत था उसने भारत के सम्राट बिन्दुसार के दरबार का वर्णन किया है। एरियन की पुस्तक से हमें सिकन्दर महान के भारत आक्रमण का ज्ञान उपलब्ध होता है। इसी प्रकार कर्टियस, जस्टिन तथा स्ट्रैबो ने भी भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।